SNEH TEACHERS TRAINING COLLEGE, JAIPUR
"Foster Emotional Intelligence in Youth Through Education" (ICFEIYE-2024)
DATE: 15 April 2024
International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन में तुलनात्मक अध्ययन

श्रीमती स्वाती जोशी, एचओडी, स्नेह टीचर टेंनिंग कालेज, जयपुर

सारांश

प्रस्तुत शोध में उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन में तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध के लिये मध्यप्रदेश के इन्दौर शहर के 10 निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन स्तरीकृत याट्टच्छिक लाटरी विधि द्वारा किया गया। प्रत्येक विद्यालय से 05–05 महिला एवं पुरूष शिक्षक को सम्मिलित किया किया गया। इस प्रकार कुल 50 महिला एवं 50 पुरूष शिक्षकों का चयन किया गया। प्रदत्तों के संकलन के लिये शोधार्थी द्वारा शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित शिक्षक भावनात्मक बुद्धि मापनी एवं डॉ. एस. के. मंगल द्वारा निर्मित मंगल शिक्षक समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया। इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध परिणामों से प्राप्त हुआ कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि के माध्य फलांको के मान में सार्थक अंतर पाया गया। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की समायोजन के माध्य फलांको के मान में सार्थक अंतर पाया गया। उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन के माध्य फलांको के मान में सार्थक अंतर पाया गया।

मुख्य शब्द – शिक्षक, भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन

प्रस्तावना

आधुनिक भारत का भविष्य उसकी शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करता है जो बदले में बौद्धिक रूप से सक्षम और प्रशिक्षित शिक्षकों पर निर्भर करता है। तेजी से बढ़ते शैक्षिक परिदृश्य में अत्यधिक कुशल और परिणामोन्मुखी शिक्षकों की आवश्यकता होती है। शिक्षा अब सुचना प्रदान करने के बारे में नहीं है यह वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से शिक्षक युवा पीढ़ी को ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण को आत्मसात करने के लिए तैयार करते है ताकि उन्हें सामाजिक आदर्शों को बढ़ावा देने और सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की जिम्मेदारी लेने के लिए उपयुक्त बनाया जा सके। शिक्षक का प्रदर्शन सम्बन्धित मनो–सामाजिक संतुष्टि से बहुत प्रभावित होता है जो वह अपने काम से प्राप्त करता है।

शिक्षा का सीधा सम्बन्ध व्यक्ति के विकास से है यह व्यक्ति के विचारों एवं व्यवहार में समाजपयोगी परिवर्तन लाती है। शिक्षा एक विकासशील प्रक्रिया है जो अनवरत एवं हर जगह चलती है। व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु पर्यन्त तक कुछ ना कुछ अवश्य सीखता है। इस प्रकार शिक्षा परस्पर सीखने–सिखाने की सतत् एवं अनवरत प्रक्रिया है एवं इसका मुख्य उद्देश्य जीवन का सर्वांगीण विकास करना है। शिक्षक उन्नतिशील राष्ट्र की नींव है। शिक्षक उस माली के समान है जो विद्यार्थी रूपी पौधों को सींचता है। यह एक सर्वस्वीकृत तथ्य है कि राष्ट्र की गुणवत्ता उसके नागरिकों को प्रदान की जाने वाली शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है, जो बदले में उसके शशिक्षकों की गुणवत्ताश पर निर्भर करती है। शिक्षकों की गुणवत्ता शब्द में एक शिक्षक के व्यक्तित्व के सभी आयाम शामिल हैं, जैसे ज्ञान का विस्तार, शिक्षण कौशल और शिक्षक का व्यवहार जिसमें उसकी भावनात्मक बुद्धिमत्ता और अपने शिक्षण वातावरण में समायोजन करना शामिल है। शिक्षक के प्राथमिक गुण जो बहुत अंतर पैदा करता है वह है कक्षा में अंतः क्रिया और उसका उसकी शिक्षक जैसा व्यवहार। उसका व्यवहार न केवल एक व्यक्ति के रूप में बल्कि एक शिक्षक के रूप में भी मुख्य रूप से उसके भावनात्मक व्यवहार से नियंत्रित होता है, जो बदले में उसके पास मौजूद भावनात्मक बुद्धिमत्ता और समायोजन करने की क्षमता पर निर्भर करता है।

एक भावनात्मक रूप से सक्षम शिक्षक किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम और उद्यम का दिल और आत्मा होता है। सीखना आनंद बन जाता है छात्र ड्रॉपआउट कम हो जाते हैं और बच्चे केवल भावनात्मक रूप से बुद्धिमान शिक्षकों की उपस्थिति और सक्षम मार्गदर्शन में सफलता की आशा के माध्यम से असफलताओं को कम करते हैं। अक्सर शिक्षक उन स्थितियों से निपटने, दूसरों के साथ संवाद करने के लिए संघर्ष करते हैं, जहां शिक्षण केवल सामग्री और पाठ्यक्रम के ज्ञान को विकसित करने के बारे में नहीं है बल्कि मानव अंतर के विभाजन के बारे में जोड़ने के बारे में होता है। हालाँकि शिक्षक का व्यक्तित्व यह भी प्रभावित करता है कि वह प्रत्येक विद्यार्थी को कैसे पढ़ाते हैं और उनसे कैसे बातचीत करते हैं? कैसे विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के साथ अपने आपको समायोजित कर लेते है ? क्योंकि उन्हें विभिन्न प्रकार के छात्रों, अभिभावकों और समाज के अन्य लोगों के साथ बातचीत करनी होती है। इसलिए शिक्षकों में भावनात्मक बुद्धि के साथ–साथ विद्यालय एवं विद्यार्थियों के साथ समायोजन करना आना आवश्यक है।'' अतः भारत के भाग्य निर्माण में यह अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक हो जाता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन की स्थितियाँ कैसी हैं?

भावनात्मक बुद्धि

कूपर और सवाफ (1997) इमोशनल इंटेलिजेंस को मानव ऊर्जा, सूचना, कनेक्शन और प्रभाव के स्रोत के रूप में भावनाओं की शक्ति और कौशल को समझने, समझने और प्रभावी ढंग से लागू करने की क्षमता के रूप में परिभाषित करते हैं। मेयर और सालोवी (1993) भावनात्मक बुद्धिमत्ता को परिभाषित करते हैं, अपनी और दूसरे की भावनाओं और भावनाओं को उनके बीच भेदभाव करने और किसी की सोच और कार्रवाई को निर्देशित करने के लिए इस जानकारी का उपयोग करने की क्षमता के रूप में। –– भावनात्मक बुद्धिमत्ता में भावनाओं को सटीक रूप से देखने, मूल्यांकन ■करने और व्यक्त

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

करने की क्षमता शामिल है; विचारों तक पहुँचने और/या भावनाओं की उत्पन्न करने की क्षमता जब वे विचारों को सम बनाते हैं भावनाओं तथा भावनात्मक ज्ञान और बौद्धिक विकास को समझने की क्षमता बनाते हैं।

समायोजन

मनोविज्ञान में परस्पर विरोधी आवश्यकताओं को संतुलित करने की व्यवहार–संबंधी प्रक्रिया को समायोजन कहते हैं। इसी प्रकार पर्यावरण की कठिनाइयों एवं बाधाओं को ध्यान में रखते हुए व्यवहार में जो परिवर्तन किए जाते हैं, उन्हें समायोजन कहते हैं। समायोजन से अभिप्राय है परिस्थितियों के अनुसार अपने आपको बदलना, जिससे उस परिवेश में बिना टकराव के जीवन यापन किया जा सके। समायोजन एक संतुलित दशा है, जिस पर पहुंचने पर हम उस व्यक्ति को सुसमायोजित कहते हैं। यह समायोजन शब्द का काफी सामान्य और प्रचलित अर्थ है। इसके अर्थ को और अच्छी तरह स्पष्ट रूप से समझने के लिए हमें विभिन्न मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई निम्न परिभाषाओं पर विचार करना अधिक उपयुक्त रहेगा।

एम.एस. शेफर – समायोजन वह प्रक्रिया है, जिसके द्वारा एक जीवित व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं और इन आवश्यकताओं की संतुष्टि को प्रभावित करने वाली परिस्थितियों के बीच संतुलन बनाए रखता है।

साइमण्ड के अनुसार – समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से प्राणी अपने आप मे ं परिवर्तन लाते हुए विभिन्न परिस्थितियो ं का सामना करता है।

समायोजन की प्रक्रिया से तात्पर्य व्यक्ति की आवश्यकताएं और उनको पूरा करने वाली परिस्थितियों के बीच तालमेल स्थापित करने से है। जो व्यक्ति इन दोनों (परिस्थिति एवं आवश्यकता) के बीच तालमेल स्थापित नहीं कर पाता है, ऐसा व्यक्ति तनाव, चिंता, कुंठा आदि का शिकार होकर असामान्य व्यवहार करने लग जाता है। इस असामान्य व्यवहार को कुसमायोजन/मानसिक रोग ग्रस्तता कहते है।

पूर्व शोध का अध्ययन :–

बुल और मंगल, (2020) ने एक लेख 'इमोशनल इंटेलिजेंस एंड इट्स इम्पोर्टेस फॉर स्कूल टीचर्स' लिखा था। यह कहते हुए कि एक भावनात्मक रूप से घटक शिक्षक किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम और उद्यम का दिल और आत्मा है, इस लेख के लेखक इस बात पर जोर देते हैं कि एक शैक्षिक कार्यक्रम की सफलता और बच्चों के बीच भावनात्मक बुद्धि का विकास भावनात्मक बुद्धि के स्तर पर बहुत कुछ निर्भर करता है। और एक शिक्षक की योग्यता। इस अध्ययन के उद्देश्य थेः स्कूली शिक्षकों के लिए भावनात्मक बुद्धिमत्ता के महत्व का पता लगाना। इस अध्ययन के निष्कर्ष में यह पाया कि हमें शिक्षक शिक्षा सेवाकालीन और पूर्व–सेवा कार्यक्रमों के पुनर्गठन और पुनर्स्थापन के बारे में गंभीरता से विचार करना होगा और योजना बनानी होगी ताकि वे भावनात्मक बुद्धिमत्ता और भावनात्मक, दक्षताओं के समुचित विकास में उपयुक्त परिणाम दे सकें।

राघवेन्द्र और श्रीधर (2021) ने ''प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावकारिता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता'' के स्तर की जांच की थी। उद्देश्यः लिंग, आयु और शैक्षिक योग्यता के संबंध में शिक्षक प्रभावकारिता और प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धिमत्ताश के स्तर का अध्ययन करना। इसने मैसूर दक्षिण के सभी शहरी प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों में से 100 प्राथमिक शिक्षकों के सरल यादृच्छिक नमूने का उपयोग किया। अध्ययन के नमूने ने दो मान्य और विश्वसनीय इन्वेंट्री उपकरणों का जवाब दिया। टीचर एफिशिएसी स्केल (टीईएस) और इमोशनल इंटेलिजेंस टेस्ट (ईआईटी)। डेटा विश्लेषण में TES और EIT दोनों पर प्राप्त अंकों के बीच संबंध को मापने के लिए पीयरसन सहसंबंध का उपयोग शामिल था और साधनों के बीच महत्वपूर्ण अंतर की जांच करने के लिए टी–परीक्षण, शिक्षक दक्षता के लिए औसत लेखा शिक्षक दक्षता पर 35 और व्यक्तिगत प्रभावकारिता पर 25 था, दोनों भावनात्मक बुद्धि की 'मध्यम' श्रेणी में आते हैं। परिणामः हालांकि, इस अध्ययन (लिंग, शैक्षिक स्तर) में विचार किए गए दो या स्वतंत्र चरों के संदर्भ में शिक्षक प्रभावकारिता और भावनात्मक भागफल के बीच कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है। तीसरे स्वतंत्र चर (आयु) के संबंध में एक महत्वपूर्ण अंतर देखा गया है।

दहिया (2022) ने माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की समायोजनशीलता का अध्ययन उनके कार्य दबाव, कार्य संलग्नता एवं सन्तोष के सन्दर्भ में रोहतक जिले के माध्यमिक विद्यालय के 500 शिक्षकों के प्रतिदर्श पर किया है। शिक्षकों की समायोजनशीलता के मापन हेतु मंगल द्वारा निर्मित 'शिक्षक समायोजनशीलता अनुसूची' का प्रयोग किया गया है। अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की समायोजनशीलता का उनकी कार्य संलग्नता एवं कार्य सन्तोष के साथ सकारात्मक सम्बन्ध तथा कार्य दबाव के साथ नकारात्मक सम्बन्ध होता है।

किन्टो, पाल (2023) ने परिवार, विद्यालय, समाज एवं समुदाय को दृष्टि में रखते हुए शिक्षकों के समायोजन पर अध्ययन किया तथा निष्कर्ष में पाया कि जहाँ पर शिक्षकों का पारिवारिक समायोजन अच्छा रहता है वहाँ पर कक्षाओं में भी समायोजन की समस्या नहीं रहती तथा शिक्षकों में उद्देश्य, अनादर की भावना तथा प्रतिरोधात्मक रूप नहीं रहता। छात्रों के भी विचार से पारिवारिक समायोजन तथा विद्यालयी समायोजन में विशेष सम्बन्ध है। इन्होंने यह भी निष्कर्ष निकाला कि विद्यालयी समायोजन के लिए पारिवारिक समायोजन आवश्यक हैं।

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

शिक्षा छात्र के समग्र विकास को पूरा करने के लिए है; इसमें शिक्षक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उन्हें तनाव और शैक्षणिक उत्कृष्टता के अलावा छात्र के भावनात्मक आयामों का भी ध्यान रखना होता है। छात्रों में इसे विकसित करने से पहले शिक्षक को अपनी भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन के साथ कार्य करना चाहिए।

औचित्य प्रत्येक वर्ष माध्यमिक शिक्षा हेतु बजट राशि में वृद्धि आदि ऐसे कारण है जिनके फलस्वयरूप उच्चतर माध्यमिक शिक्षा में वेतन, बुनियादी सुविधाएँ, भौतिक ससाधन आदि में अभूतपूर्व सुधार हुआ है। इन सुधारों के परिणामस्वरूप

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

उच्चतर माध्यमिक शिक्षा क्षेत्र अत्यधिक उपयुक्त व्यवसाय के रुप में उत्पन्न हुआ है किन्तु शिक्षण एक सम्पूर्ण समर्पण वाला कार्य है। इसमें भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन के अभाव में शिक्षा के मानदण्डों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। यह एक विचारणीय विषय है कि विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों तथा योजनाओं के क्रियान्वयन के पश्चात भी शिक्षकों में भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन का अभाव बना हुआ है। शिक्षक जब अपनी शिक्षा पूर्ण कर शिक्षा सम्बन्धी व्यावसायिक पाठ्यक्रम करता है तो शिक्षण की अनेक प्रक्रियाओं एवं पद्धतियों से परिचित होता है किन्तु जब वह वास्तविकता के धरातल पर शिक्षक की भूमिका में आता है तो उन पद्धतियों, प्रक्रियाओं व मौलिकताओं के लिए अधिक स्थान नहीं होता। जिससे वह हतोत्साहित हो उठता एवं उसकी समायोजन क्षमता कम हो जाती है, जिससे उसकी भावनात्मक बुद्धि आदि पर नकारात्मक प्रभाव पडता है और उसकी कार्य के प्रति रुचि, उत्साह उत्सुकता आदि का ह्रास होने लगता हैं।

इस अध्ययन के द्वारा शोधार्थी ने यह जानने का प्रयास करेगी कि शिक्षक अपने शिक्षण कार्य के प्रति स्वयं को किस प्रकार समायोजित करते हैं? उनकी भावनात्मक बुद्धि और समायोजन से उन पर क्या प्रभाव पडता है? भावनात्मक बुद्धि को बढ़ाने में कौन से कारक सहायक होते हैं ? उपरोक्त सभी प्रश्नों को जानने के लिये शोधार्थी के मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई और उसने इस विषय ''उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन का अध्ययन'' पर शोध अध्ययन करने का निश्चय किया।

समस्या कथन

''उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन में तुलनात्मक अध्ययन करना''

उद्देश्य

अध्ययन के निम्न उद्देश्य थे–

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ

अध्ययन की निम्न परिकल्पनाएँ थी–

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।
3. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में मध्यप्रदेश के इन्दौर शहर के 10 निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन स्तरीकृत याट्टच्छिक लाटरी विधि द्वारा किया गया। प्रत्येक विद्यालय से 05–05 महिला एवं पुरूष शिक्षक को सम्मिलित किया किया गया। इस प्रकार कुल 50 महिला एवं 50 पुरूष शिक्षकों का चयन किया गया, क्योंकि ये सभी शोध समस्या को प्रभावित करने वाले तत्व है।

उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन के लिये शोधार्थी द्वारा निम्न प्रश्नावली का प्रयोग किया गया, जो निम्न है :–

अ) भावनात्मक बुद्वि मापनी :– शुभ्रा मंगल द्वारा निर्मित शिक्षक भावनात्मक बुद्वि मापनी का प्रयोग किया गया।

ब) समायोजन मापनी :– डॉ. एस. के. मंगल द्वारा निर्मित मंगल शिक्षक समायोजन मापनी का प्रयोग किया गया।

शोध विधि

इस शोध कार्य में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तो का संकलन –

शोधार्थी द्वारा प्रदत्तों के संकलन हेतु उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के प्राचार्यो से अनुमति प्राप्त कर महिला एवं पुरूष शिक्षकों से भावनात्मक बुद्वि एवं समायोजन से संबंधित प्रामाणिक मापनियों को सोहार्द्रपूर्ण वातावरण में भरवायी गई।

प्रदत्तो का विश्लेषण

प्रस्तुत अध्ययन में परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु संकलित प्रदत्तो का विश्लेषण **स्वतंत्र *t* टेस्ट** द्वारा किया गया।

परिणाम एवं विवेचनाः

उद्देश्य 1 – उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की भावनात्मक बुद्वि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की भावनात्मक बुद्वि का तुलनात्मक अध्ययन करना था। प्राप्त प्रदत्तो का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं स्वतंत्र टी–परीक्षण द्वारा किया गया। प्रदत्त विश्लेषण का विवरण तालिका 4.1 मे दर्शाया गया है।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

तालिका 1 :– माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की भावनात्मक बुद्वि के माध्य फलांकों का सारांश

भावनात्मक बुद्वि	N	M	SD	SEM	't' value	df	Inference
महिला शिक्षक	50	31.18	3.98	0.47	4.29*	98	Significant
पुरूष शिक्षक	50	28.27	3.39	0.47			

*सार्थकता का स्तर .01

तालिका 1 से पता चलता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की भावनात्मक बुद्वि का माध्य 31.18 एवं प्रमाणिक विचलन 3.98 है एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की भावनात्मक बुद्वि का माध्य 28.27 एवं प्रमाणिक विचलन 3.39 है, तथा t का मान 4.29 है, जो $df = 98$ के सार्थकता के स्तर 0.01 पर तालिका के मान 2.567 से अधिक है। इसलिये यह सार्थकता के स्तर 0.01 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना **"उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की भावनात्मक बुद्वि में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।"** निरस्त की जाती है।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की भावनात्मक बुद्वि के माध्य फलांकों का मान 31.18 हैं, जोकि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की भावनात्मक बुद्वि के माध्य फलांको के मान 28.07 से सार्थक रूप से ज्यादा है। अर्थात् निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों की भावनात्मक बुद्वि के माध्य फलांको के मान, उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की भावनात्मक बुद्वि के माध्य फलांको के मान की तुलना में अधिक है। इसलिये कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की भावनात्मक बुद्वि के माध्य फलांको के मान में सार्थक अंतर पाया गया।

उद्देश्य 2 – उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना था। प्राप्त प्रदत्तो का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं स्वतंत्र टी–परीक्षण द्वारा किया गया। प्रदत्त विश्लेषण का विवरण तालिका 4.2 मे दर्शाया गया है।

तालिका 2 :– उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों के समायोजन के माध्य फलांकों का सारांश

समायोजन	N	M	SD	SEM	't'value	df	Inference
महिला शिक्षक	50	47.55	5.98	0.84	8.54*	98	Significant
पुरूष शिक्षक	50	38.62	4.34	0.61			

*सार्थकता का स्तर .01

तालिका 2 से पता चलता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों के समायोजन का माध्य 47.55 एवं प्रमाणिक विचलन 5.98 है एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों के समायोजन का माध्य 38.62 एवं प्रमाणिक विचलन 4.34 है, तथा t का मान 8.54 है, जो $df = 98$ के सार्थकता के स्तर 0.01 पर तालिका के मान 2.567 से अधिक है। इसलिये यह सार्थकता के स्तर 0.01 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना **"उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों के समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।"** निरस्त की जाती है।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों के समायोजन के माध्य फलांकों का मान 47.55 हैं, जोकि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों के समायोजन के माध्य फलांको के मान 38.62 से सार्थक रूप से ज्यादा है। अर्थात् निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों के समायोजन के माध्य फलांको के मान, उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों के समायोजन के माध्य फलांको के मान की तुलना में अधिक है। इसलिये कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों के समायोजन के माध्य फलांको के मान में सार्थक अंतर पाया गया।

उद्देश्य 3 – उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्वि एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना।

International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double-Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal, Impact factor (SJIF) = 7.938

शोध अध्ययन का उद्देश्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करना था। प्राप्त प्रदत्तो का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन एवं स्वतंत्र टी–परीक्षण द्वारा किया गया। प्रदत्त विश्लेषण का विवरण तालिका 4.3 मे दर्शाया गया है।

तालिका 3 :– उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन के माध्य फलांकों का सारांश

शिक्षक	N	M	SD	SEM	't'value	df	Inference
भावनात्मक बुद्धि	100	55.23	6.67	0.66	11.31*	198	Significant
समायोजन	100	45.56	5.34	0.53			

*सार्थकता का स्तर .01

तालिका 3 से पता चलता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि का माध्य 55.23 एवं प्रमाणिक विचलन 6.67 है एवं उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन का माध्य 45.56 एवं प्रमाणिक विचलन 5.34 है, तथा t का मान 11.31 है, जो $df = 198$ के सार्थकता के स्तर 0.01 पर तालिका के मान 2.567 से अधिक है। इसलिये यह सार्थकता के स्तर 0.01 पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना **''उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन में कोई सार्थक अंतर नहीं होगा।''** निरस्त की जाती है।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि के माध्य फलांकों का मान 55.23 हैं, जोकि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन के माध्य फलांको के मान 45.56 से सार्थक रूप से ज्यादा है। अर्थात् निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि के माध्य फलांको के मान, उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के समायोजन के माध्य फलांको के मान की तुलना में अधिक है। इसलिये कहा जा सकता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन के माध्य फलांको के मान में सार्थक अंतर पाया गया।

निष्कर्ष

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि के माध्य फलांको के मान में सार्थक अंतर पाया गया।
2. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला एवं पुरूष शिक्षकों की समायोजन के माध्य फलांको के मान में सार्थक अंतर पाया गया।
3. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की भावनात्मक बुद्धि एवं समायोजन के माध्य फलांको के मान में सार्थक अंतर पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध के प्राप्त परिणामों के अध्ययन से पता चलता है कि वर्तमान अध्ययन का परिणाम शिक्षक को नौकरी की स्थिति में समायोजन के लिये मदद करता है और उनके जीवन को बेहतर बनाने में मदद करता है। वर्तमान में किए गए अध्ययन से प्रेरणा स्तर के शिक्षकों को बेहतर बनाने में भी मदद मिल सकती है। इन निष्कर्षों का निहितार्थ यह है कि शिक्षकों को सकारात्मक कार्य संबंधित परिणामों को बढ़ावा देने के लिए अपने प्रयासों से अधिक स्वायत्ता प्रदान करने की आवश्यकता हो सकती है जैसे भावनात्मक बुद्वि, समायोजन आदि। अध्ययन का परिणाम शिक्षकों के परिवार के सदस्यों को शिक्षकों की समस्या को समझने में मदद कर सकता है और उनके काम में सहूलियत दे सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

- बुच, एम0 बी0 (1993), फिफ्थ सर्वे ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च, न्यू दिल्ली,
- शुक्ला सी एस0 (2004) भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास, नई दिल्ली, प्रभात प्रकाशन।
- भटनागर, सुरेश (2005), वर्तमान भारतीय शिक्षा एवं समस्यायें, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ।
- अस्थाना, वी0 एण्ड अस्थाना, श्वेता (2005), में सरमेन्ट एण्ड इवेल्यूएशन्स इन साइकोलॉजी एण्ड एजूकेशन, आगरा विनोद पुस्तक मन्दिर।
- शर्मा आर0 ए0 (1995) शैक्षिक अनुसंधान के सिद्धान्त मेरठ इण्टरनेशनल पब्लिकेशन हाउस।
- बुल और मंगल, (2020), 'इमोशनल इंटेलिजेंस एंड इट्स इम्पोर्टेस फॉर स्कूल टीचर्स'
- राघवेन्द्र और श्रीधर (2021), ''प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावकारिता और भावनात्मक बुद्धिमत्ता'', लघु शोध अध्ययन, बैंगलोर विश्वविद्यालय।
- दहिया (2022), ''माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की समायोजनशीलता का अध्ययन उनके कार्य दबाव, कार्य संलग्नता एवं सन्तोष के सन्दर्भ में अध्ययन,'' पी0 एच0 डी0 एज्यूकेशन आगरा विश्वविद्यालय।
- किन्टो, पाल (2023), ''परिवार, विद्यालय, समाज एवं समुदाय को दृष्टि में रखते हुए छात्रों के समायोजन पर अध्ययन'', नवीन शोध संस्थान, राष्ट्रीय पत्रिका, नीमच।